पाठ्य का परिचय (Handout) मायावी सरोवर और यक्ष-प्रश्न

पांड्वों के बारह वर्ष के वनवास की अवधि समाप्त होने में कुछ ही दिन शेष रह गये थे तब एक दिन पांचों पांडव एक ब्राह्मण की सहायता करने जंगल में बहुत दूर निकल गये | वे काफी थक गये थे और उनको जोरों की प्यास लग रही थी | नकुल ने पेड़ पर चढ़कर देखा तो उसे कुछ दूरी पर बगुले और पानी के नजदीक उगने वाले पौधे दिखाई दिए | उसने भाइयों को बताया कि शायद पानी वहीं नजदीक में ही मिल जाएगा | युधिष्ठिर ने नकुल से जाकर पानी लाने को कहा और नकुल तुरंत निकल पड़ा |कुछ दूर चलने पर नकुल को जलाशय नजर आया | अब उसने सोचा पहले अपनी प्यास बुझा लूँ फिर अपने भाइयो के लिए तरकश में जल भरकर ले जाऊँगा | जैसे ही नकुल ने जल को हाथ में लिया तभी एक आवाज आयी "माद्री पुत्र , रुक जाओ इस जलाशय का पानी तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दिए बिना नही पी सकते इसलिए तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दो तभी मैं तुम्हे पानी पीने की आज्ञा दूँगा "| नकुल ने उस आवाज की परवाह किए बिना पानी पी लिया और वहीं मूर्छित हो गया |नकुल के काफी देर तक न लौटने पर युधिष्ठिर को चिंता हुई तो सहदेव को नकुल का पता कर पानी लेकर आने को कहा | सहदेव जैसे ही जलाशय पर पहुँचा तो उसको नकुल मूर्छित पड़ा हुआ मिला | लेकिन उसे प्यास इतनी जोर से लग रही थी कि नकुल के हालात जानने से पहले वह सरोवर से पानी पीने लगा ,वही आवाज उसे भी आयी | सहदेव ने भी नकुल की तरह वाणी की ओर ध्यान न देते हुए पानी पी लिया और वह भी मूर्छित हो गया |जब सहदेव काफी समय तक नहीं लौटा तो युधिष्ठिर ने अर्जुन को भेजा अर्जुन दौड़ता हुआ सरोवर के निकट पहुँचा, उसे दोनों भाई मूर्छित गिरे हुए मिले | वह बैठकर इनके मूर्छित होने का कारण सोचने लगा तभी सरोवर में पानी देखकर वह पानी पीने के लिए उठ गया | उसे भी वही आवाज आई अर्जुन ने क्रोधित होकर वाणी की दिशा की ओर तीर चलाना शुर कर दिया किन्तु बाणों से वाणी पर कोई असर नही हुआ | बाण चलाकर अर्जुन और ज्यादा थक गया और उसने सोचा कि पहले पानी से अपनी प्यास बुझा लूँ फिर इस दुष्ट का पता लगाऊँगा | उसने भी सरोवर का

पानी पी लिया और मूर्छित होकर गिर पड़ा | अब युधिष्ठिर की चिंता ओर बढ़ गयी उन्होंने भीम को भेजा | भीम जब सरोवर तक पंहुचा तो सभी भाई मूर्छित होकर गिरे पड़े थे |

भीम ने भी अपने सभी भाइयों की तरह वाणी का ध्यान दिए बिना सरोवर का पानी पी लिया और मूर्छित होकर गिर पड़ा | अब युधिष्ठिर अकेले बैठे सोचने लगे कि मेरे सभी भाई कैसी विपदा में पस गये है कि अभी तक नहीं लौटे !उन्होंने स्वयं जाना उचित समझा | युधिष्ठिर उस सरोवर के नजदीक पहुँचे और सभी भाइयों को मूर्छित पड़ा हुआ देखा तो उनके शोक की सीमा नहीं रही और वहीं बैठकर विलाप करने लगे | युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के शरीर को देखा तो उनके शरीर पर किसी भी प्रकार के चोट के निशान नही दिखे उन्हें इसमें किसी मायावी जाल का हाथ लगा उन्होंने सोचा कि शायद इस पानी में ही विष मिला हो तो उन्होंने भी पानी पीने का प्रयास किया उन्हें भी वही वाणी सुनाई दी | युधिष्ठिर ने बड़ी नम्रता से यक्ष को प्रश्न पूछने को कहा | यक्ष ने अनेक प्रश्न किए उनके युधिष्ठिर ने सही सही उत्तर दिए | यक्ष प्रसन्न हुआ और बोला - मैं तुम्हारे उत्तरों से प्रसन्न हुआ इसलिए तुम्हारे भाइयो में से एक को जीवित करता हूँ , तुम जिसका भी नाम लोगे, वह जीवित हो जाएगा " | युधिष्ठिर ने नकुल का नाम ले लिया |यक्ष आश्चर्य में पड़ गया और पूछा "धर्मराज , तुमने बलशाली भीम और धनुर्धर अर्जुन को छोडकर नकुल का नाम क्यों लिया " | युधिष्ठिर ने कहा "यक्षराज, मेरी दो माताएँ हैं जिनमें से माता कुंती के पुत्रो में से मैं तो जीवित हूँ लेकिन माता माद्री के पुत्रो में से कोई जीवित नहीं रहा, इसलिए यदि आप नकुल को जीवित कर दें तो मेरी दोनों माताओं का एक-एक पुत्र जीवित रह जाएगा |यक्ष युधिष्ठिर का उत्तर सुनकर गद्गद हो गया और उसने सारे भाइयों को जीवित कर दिया।